डा. पी.एस. पाटील,
अध्यक्ष - हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविदयालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४.

* संस्तुति *

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री अरूण किसन गंभिरे का "मणि मधुकर के "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास का अनुशीलन" लघुशोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।

तिथि : 10 JAN 1996

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४

डा. विलास घाटे
पूर्व प्र. कुलगुरू, शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.
दिनांक : 10 JAN 1996

* प्रमाणपत्र *

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री अरुण किसन गंभिरे ने मेरे निर्देशन में "मणि मधुकर के "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास का अनुशीलन" लघुशोध - प्रबंध ; शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए रखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है और इसमें शोधछात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघुशोध - प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

शोध निर्देशक,

कोल्हापुर।
तिथि : 10 JAN 1996

(डा. विलास घाटे)

* प्रख्यापन *

"मणि मधुकर के "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास का अनुशीलन" लघुशोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

(श्री. अरुण किसन गंभिरे)

कोल्हापुर।

तिथी : 10 JAN 1996

" प्राक्कथन "

हिन्दी साहित्य के इतिहास में उपन्यास विधा को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। हिन्दी उपन्यास के प्रारंभिक काल में उपन्यास में कल्पना की भरमार थी परन्तु आधुनिक काल में उपन्यास विधा में वास्तविकता तथा यथार्थ चित्रण मिलता है। समाज तथा सामाजिक समस्याओं को पाठक के सामने रखने का कार्य अपनी रचनाओं के द्वारा करता है। आज पाठक उपन्यास पढ़ते समय उसमें अपने जीवन की अनुभूति को ढूँढता है और समाज के यथार्थ का चित्रण खोजता है। मणि मधुकरजी ने अपनी रचनाओं में बिलकुल इसी का चित्रण किया है। मणि मधुकरजी प्रयोगशील नाटककार, प्रगतिवादी कवि, श्रेष्ठ कहानीकार और अच्छे उपन्यासकार हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया है। उनके "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास का अनुशीलन' ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय और उद्देश्य है।

प्रेरणा :

मैं एम.ए. उत्तीर्ण होने के पश्चात एम्. फिल्. में आया तब हमें बताया कि आप लोगों को सिनॉप्सिस तैयार करवानी है। तब मैं एक-एक किताब पढ़ता गया। भारत-पाकिस्तान विभाजन से हमारे देश पर अनेक दुष्परिणाम हो गए हैं। भारत-पाक विभाजन तथा उससे निर्मित समस्याओं को अनेक लेखकों ने अपनी रचनाओं में लिखने का प्रयास किया है। उसमें प्रतिनिधी हैं - यशपाल - (झूठा-सच), राही मासूम रजा - (आधाँ गाँव), भीष्म सहानी - (तमस), मणि मधुकर - (पत्तों की बिरादरी) आदि। इनमें से मुझे मणि मधुकरजी का " पत्तों की

बिरादरी" उपन्यास सबसे अलग लगा। इस उपन्यास के शीर्षक में ही प्रतीकात्मकता तथा आकर्षण है। तब मैंने निश्चय किया कि मैं मणि मधुकर के " पत्तों की बिरादरी" उपन्यास पर ही एम्. फिल्. करूँगा और तब मैंने डॉ. पी. एस्. पाटीलजी तथा डॉ. अर्जुनजी चौहाण से प्रस्तुत विषय पर चर्चा की। इन्होंने तुरन्त अनुमति दी। अब मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये - क्या अब तक अन्य किसी विद्वान ने इसपर कार्य किया है ? इसकी खोज करते हुए मुझे ज्ञात हुआ कि मणि मधुकर पर अब तक किसी भी विश्वविद्यालय में कार्य नहीं हुआ। सिर्फ शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के अन्तर्गत श्रीमति रुकसाना शेखजी ने "प्रयोगशील नाटककार : मणि मधुकर।" विषाय पर कार्यारंभ किया है। किन्तु उनके उपन्यास पर किसी ने भी अब तक शोधा कार्य नहीं किया है। इसलिए मैंने "मणि मधुकर के "पत्तो की बिरादरी" उपन्यास का अनुशीलन" विषाय पर अपना लघुशोध-प्रबंध लिखना शुरू किया। इस विषय का अध्ययन करते समय शुरू में मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये -

१) मणि मधुकरजी के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव किस तरह पड़ा है ?

२) "पत्तों की बिरादरी" का कथानक किस प्रकार का है ?

३) उपन्यास के पात्रों के चरित्र-चित्रण में मणि मधुकरजी कहाँ तक सफल हुए हैं ?

४) इस उपन्यास में किस स्थान, समय तथा परिस्थितियों का चित्रण किया गया है ?

५) उपन्यास के संवाद तथा भाषा-शैली में लेखक की प्रतिभा कहाँ तक दिखाई देती है ?

६) उपन्यास लिखने के पीछे लेखक का उद्देश्य क्या है ?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध में किया है और अंत में उपसंहार के रूप में दे दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है -

१) प्रथम-अध्याय - "मणि मधुकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

इस अध्याय में मैंने उनके जीवन-परिचय के साथ-साथ उनकी अलग-अलग विधाओं में लिखी रचनाओं को विभाजित करके प्रस्तुत किया है। साथ ही जीवनवृत्त तथा प्राप्त मान-सम्मानों की जानकारी दी है।

२) द्वितीय अध्याय - "मणि मधुकर के "पत्तो की बिरादरी" उपन्यास का अनुशीलन।"

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु सोलह दृश्यों में विभाजित है। इसमें मुख्य पात्रों की सम्बध्द कथा के साथ अन्य उपकथाएँ भी हैं जिनका मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध में संक्षेप में समावेश किया है। साथ ही समीक्षा करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

३) तृतीय अध्याय - "पत्तों की बिरादरी" में पात्र और चरित्र-चित्रण"

इस अध्याय में मैंने पात्रों को स्वरूप के आधार पर, महत्व के आधारपर विभाजित करते हुए उनके चारित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिये हैं।

४) चतुर्थ अध्याय - "पत्तों की बिरादरी" के संवाद और भाषाशैली।"

इस अध्याय में मैंने संवाद की परिभाषा, उसका उद्देश्य तथा उसके गुणों की चर्चा करते हुए उसके अनुसार "पत्तों की बिरादरी" के

संवादों का विवेचन किया है। साथ ही भाषा के रूप तथा शैली के प्रकारों की चर्चा करते हुए उपन्यास की समीक्षा की है और अंत में निष्कर्ष दे दिया है।

५) पंचम अध्याय - "पत्तों की बिरादरी" का उद्देश्य।"

इस अध्याय में मैंने उपन्यास लिखने के पीछे मणि मधुकरजी का कौनसा उद्देश्य था इसे ढूँढने का प्रयास किया है, जिसमें मैंने कई मुख्य तथा गौण उद्देश्यों को पाया और फिर निष्कर्ष रूप में भी उन उद्देश्यों की चर्चा की है।

उपसंहार -

सभी अध्यायों के विवेचन के उपरांत मैंने उपसंहार के रूप में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है जो उपन्यास के पूरे अध्ययन का सार है। अंत में मैंने "संदर्भ ग्रंथ-सूची" दे दी हैं।

मेरी इस लघुशोध-प्रबंध की मौलिकताएँ निम्नलिखित हैं -

१) संपूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

२) चरित्रों को व्यावहारिक दृष्टि से सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने की कोशिश की है।

३) भाषा का इतना सूक्ष्म अध्ययन किया है कि हर शब्द को जाति एवं प्रकार का उल्लेख किया है।

* ऋण निर्देश *

इस लघुशोध-प्रबंध की पूर्ति में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिन्होंने मेरी मदद की है उन सभी को धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

सबसे पहले तो मैं अपने गुरुवर्य, शोधनिर्देशक डॉ. विलास घाटेजी, पूर्व प्रकुलगुरू, शिवाजी विश्वविदयालय, कोल्हापुर के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगा। उन्होंने मुझे जो अनमोल मार्गदर्शन किया है उससे मैं उऋण नहीं हो सकता।

मेरा कोई भी कार्य माता-पिता के आशीर्वाद के बिना पूरा नहीं होता। उनके आशीर्वाद से ही आज मैंने अपना कार्य सफलता पूर्वक पूरा किया है।

इसके साथ ही मेरे अन्य गुरुवर्य डॉ. पी.एस. पाटीलजी (विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविदयालय, कोल्हापुर) तथा डॉ. अर्जुनजी चौहाण (अधिव्याख्याता, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविदयालय, कोल्हापुर) ने मुझे पग-पग पर मार्गदर्शन किया। इस ऋण के प्रतिदान में आभार या धन्यवाद जैसे शब्दों से ऋण मुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। साथ ही मुझे सौ. एम.एस. जाधवजी का भी अनमोल मार्गदर्शन मिला।

मेरे मित्र परिवार में श्री. चतुर्भुज गिद्दे, श्री. सुनील बनसोडे, श्री. भारत कुचेकर, श्री. रामचंद्र लोंढे, कु. सुजाता किल्लेदार, कु. गीता भोसले आदि ने भी मेरी सहायता की।

संदर्भ ग्रन्थों के बिना तो कोई भी लघुशोध - प्रबंध पूरा नहीं होता। मैं शिवाजी विश्वविदयालय के ग्रंथपाल समवेत सभी कर्मचारी वर्ग

और स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर के ग्रंथपाल को धन्यवाद अर्पित करता हूँ। जिनके सहकार्य के बिना यह लघुशोध-प्रबंध पूरा न हो पाता।

साथ ही मैं टंकलेखक कु. माया मोहिते (कोल्हापुर) का भी आभारी हूँ।

अंत में मैं इन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपना लघुशोध-प्रबंध परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर।
दिनांक : ४ / ९.१९९५.

शोधछात्र
(श्री. गंभिरे अरुण किसन)